

प्रधान संपादक : गोपाल गावंडे

ईश्वर से एकाकारिता की आकांक्षा ही धर्म है



जीवन में सुख और संघर्ष दोनों ही स्वाभाविक हैं। कठिन परिस्थितियों में अधिकांश लोग ईश्वर का स्मरण करते हैं, किंतु वास्तविक आध्यात्मिकता तब प्रकट होती है जब व्यक्ति सुख और संतोष के क्षणों में भी परमात्मा से जुड़ा रहे। यही निरंतर जुड़ाव जीवन की स्थायी शांति और संतुष्टि का आधार बनता है सहज योग का संदेश है कि मनुष्य को यह समझना चाहिए कि संसार की अधिकांश उपलब्धियाँ यहीं रह जाती हैं, जबकि उसके साथ केवल उसका धर्म और आध्यात्मिक विकास ही आगे बढ़ता है।

धर्म केवल पूजा-पद्धति या बाहरी अनुष्ठानों का नाम नहीं, बल्कि परमात्मा को प्राप्त करने की सच्ची और शुद्ध आकांक्षा है। जब मनुष्य के भीतर यह आकांक्षा जागृत होती है, तभी उसका जीवन पवित्रता और दिव्यता की ओर

अग्रसर होने लगता है।

पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए संघर्ष करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। ऐसे समय में सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना स्वाभाविक है, लेकिन जब हमारी प्रार्थना केवल सांसारिक इच्छाओं तक सीमित होती है, तब उसका उद्देश्य पूर्णतः शुद्ध नहीं होता। सहज योग व्यक्ति को अपनी सामान्य इच्छाओं को शुद्ध इच्छा में रूपांतरित करने का मार्ग प्रदान करता है। यही शुद्ध इच्छा साधक को परमात्मा के चित्त में स्थान दिलाती है और उसके जीवन में आंतरिक परिवर्तन का आरंभ करती है। परमपूज्य श्री माताजी निर्मला देवी ने कहा है—“एक बार जब आप सच्चाई को धारण कर लेते हैं तो आपका अपना जीवन ही लोगों को विश्वास दिलाएगा कि आप दिव्य हैं। जो कुछ भी आप करते हैं, वह लोगों को यकीन देगा कि आप दिव्य हैं, और जो कुछ भी आप कहेंगे, लोग जान जाएंगे कि यह दिव्य शक्ति से आ रहा है।”

संसद में गंभीरता, जनता से संवाद और युवाओं से जुड़ाव पर पीएम मोदी का जोर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को अपने आवास पर नाश्ते पर आयोजित बैठक में भाजपा के नए राज्यसभा सांसदों और हाल ही में पार्टी में शामिल हुए सांसदों को संसदीय कार्यशैली और जनसंपर्क को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। बैठक में 37 सांसद शामिल हुए। प्रधानमंत्री ने सांसदों से कहा कि संसद को पूरी गंभीरता के साथ चलाना लोकतंत्र की जिम्मेदारी है। उन्होंने सलाह दी कि प्रत्येक सांसद प्रतिदिन कम से कम एक-दो घंटे संसद की लाइब्रेरी में अध्ययन करें, ताकि विषयों की बेहतर समझ विकसित हो



सके और सदन में प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित हो। युवाओं से जुड़ाव पर

प्रधानमंत्री ने विशेष जोर देते हुए कहा कि उनकी बात ध्यान से सुनें, उन्हें समझें और विनम्रता के साथ संवाद करें। साथ ही सांसद खेल योजना को अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय रूप से लागू करने की भी सलाह दी, ताकि युवाओं के साथ निरंतर संपर्क बना रहे।

बैठक के दौरान प्रधानमंत्री ने अपने सार्वजनिक जीवन के अनुभव साझा किए और सांसदों से अनौपचारिक चर्चा भी की। सांसदों ने इसे प्रेरणादायक और मार्गदर्शक बैठक बताया। भाजपा नेताओं के साथ हाल ही में अन्य दलों से भाजपा में शामिल हुए कुछ राज्यसभा सांसद भी बैठक में मौजूद रहे।

स्वच्छ शहरों का सपना, मजबूत सीवेज व्यवस्था से ही होगा साकार

नई दिल्ली। देशभर में मानसून की बारिश जहां किसानों और जलस्रोतों के लिए राहत लेकर आती है, वहीं दूसरी ओर अधिकांश शहरों की बदहाल सीवेज और जल निकासी व्यवस्था की पोल भी खोल देती है। हर साल बारिश के दौरान सड़कों पर जलभराव, खुले नालों से बहता गंदा पानी और जगह-जगह फैली गंदगी यह सवाल खड़ा करती है कि आखिर देश के शहर आधुनिक विकास के दावों के बावजूद बुनियादी स्वच्छता के

मामले में पीछे क्यों हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि शहरों की सबसे बड़ी समस्या केवल बारिश नहीं, बल्कि कमजोर सीवेज नेटवर्क और अधूरी शोधन व्यवस्था है, जिसके कारण बारिश का पानी और सीवेज एक साथ मिलकर गंभीर स्वास्थ्य और पर्यावरणीय संकट पैदा कर देते हैं। देश के अधिकांश शहरों और कस्बों का बड़ा हिस्सा आज भी व्यवस्थित सीवेज नेटवर्क से नहीं जुड़ा है। कई इलाकों में सीवर लाइनें ही नहीं हैं।

Bright Future
LEARNING ACADEMY

An Initiative by
RANJEET TIMES GROUP

ADMISSIONS OPEN
2026-27
KG-1 to Class 10

QUALITY EDUCATION

EXPERIENCED FACULTY

VALUES & DISCIPLINE

HOLISTIC DEVELOPMENT

हर बच्चे का उज्ज्वल भविष्य हमारी प्राथमिकता

प्रवेश हेतु संपर्क करें
9827068888

BRIGHT FUTURE LEARNING ACADEMY
An Initiative by **RANJEET TIMES GROUP**

आधुनिक शिक्षा | अनुभवी शिक्षक | सुरक्षित परिसर | सर्वांगीण विकास

पुंछ में सुरक्षाबलों की बड़ी सफलता

आतंकी ठिकाने से हथियार और गोला-बारूद बरामद

जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में सुरक्षाबलों ने आतंकवाद के खिलाफ अभियान के दौरान बड़ी सफलता हासिल की है। संयुक्त तलाशी अभियान में एक संदिग्ध आतंकी ठिकाने का पता लगाया गया, जहां से एके राइफल की मैगजीन, बड़ी मात्रा में गोला-बारूद और अन्य सैन्य सामग्री बरामद की गई।

सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार, बरामद सामग्री से संकेत मिलता है कि इस ठिकाने का उपयोग आतंकियों द्वारा हथियार छिपाने और गतिविधियों के संचालन के लिए किया जाता था। पूरे इलाके



को घेरकर व्यापक तलाशी अभियान जारी है, ताकि किसी भी छिपे हुए आतंकी या अतिरिक्त हथियारों का पता लगाया जा सके।

अधिकारियों का कहना है कि बरामद हथियारों और सामग्री की जांच की जा रही है। साथ ही यह भी पता लगाया जा रहा है कि इनका संबंध किस आतंकी संगठन से है और हाल की किसी आतंकी गतिविधि में इनका इस्तेमाल हुआ था या नहीं।

सीमा से सटे संवेदनशील क्षेत्रों में सुरक्षा बल लगातार निगरानी और तलाशी अभियान चला रहे हैं, ताकि घुसपैठ और आतंकवादी गतिविधियों को समय रहते विफल किया जा सके।

लू और बिजली गिरने की घटनाएं भी प्राकृतिक आपदा की श्रेणी में, प्रभावितों को मिलेगा सरकारी मुआवजा



बदलते मौसम और चरम जलवायु घटनाओं को देखते हुए लू तथा बिजली गिरने से होने वाली जनहानि और क्षति को अब प्राकृतिक आपदा की श्रेणी में शामिल किए जाने की व्यवस्था लागू की गई है। इस निर्णय के बाद प्रभावित परिवारों को सरकारी नियमों के अनुसार आर्थिक सहायता और मुआवजा मिलने का मार्ग अधिक स्पष्ट होगा। आपदा प्रबंधन से जुड़े अधिकारियों के अनुसार हाल के वर्षों में लू और आकाशीय बिजली की घटनाओं में वृद्धि दर्ज की गई है। इन घटनाओं से हर वर्ष बड़ी संख्या में लोगों की जान जाती है और कई लोग गंभीर रूप से घायल भी होते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए राहत और पुनर्वास व्यवस्था को मजबूत करने पर जोर दिया गया है। नई व्यवस्था के तहत पात्र प्रभावितों को निर्धारित नियमों और सत्यापन प्रक्रिया के बाद आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। मुआवजे की राशि संबंधित सरकारी दिशा-निर्देशों और राज्य तथा केंद्र की लागू योजनाओं के अनुसार तय होगी। विशेषज्ञों का कहना है कि राहत व्यवस्था के साथ-साथ लोगों में जागरूकता बढ़ाना भी जरूरी है। तेज गर्मी के दौरान अनावश्यक रूप से धूप में निकलने से बचना, पर्याप्त पानी पीना तथा गरज-चमक के समय खुले मैदान, पेड़ों और बिजली के खंभों से दूर रहना जीवन रक्षा के लिए महत्वपूर्ण उपाय माने जाते हैं।

आबूधाबी-इंदौर उड़ान से पहली बार सोने की तस्करी का मामला, यात्री से एक किलो सोना बरामद



इंदौर के देवी अहिल्याबाई होलकर अंतरराष्ट्रीय विमानतल पर आबूधाबी से आई उड़ान में पहली बार सोने की तस्करी का मामला सामने आया है। सीमा शुल्क अधिकारियों ने एक यात्री को पकड़ा, जिसके शरीर में छिपाकर

लाया गया करीब एक किलोग्राम सोना बरामद किया गया। प्रारंभिक जांच के अनुसार, यात्री ने सोने को विशेष तरीके से शरीर के भीतर छिपाया था ताकि जांच एजेंसियों की नजर से बच सके। संदेह होने पर की गई गहन जांच में तस्करी का

खुलासा हुआ।

सीमा शुल्क विभाग ने

सोना जब्त कर लिया है और आरोपी से पूछताछ की जा रही है। अधिकारी यह पता लगाने में जुटे हैं कि तस्करी के पीछे कोई संगठित गिरोह सक्रिय है या यह अकेले किया गया प्रयास था। साथ ही सोने की खरीद, आपूर्ति श्रृंखला और संभावित नेटवर्क की भी जांच की जा रही है।

यह मामला इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि आबूधाबी से इंदौर आने वाली उड़ान में इस तरह की सोने की तस्करी का यह पहला मामला बताया जा रहा है। जांच एजेंसियों ने अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर निगरानी और सतर्कता बढ़ा दी है।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद वायुसेना की बड़ी सक्रियता, मित्र देशों के साथ होंगे संयुक्त हवाई अभ्यास

ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारतीय वायुसेना की परिचालन क्षमता और सामरिक तैयारियों को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा तेज हुई है। इसी क्रम में आने वाले दो महीनों में भारतीय वायुसेना विभिन्न मित्र देशों के साथ संयुक्त हवाई अभ्यास

चलाने की क्षमता को मजबूत करना है। इस दौरान भारतीय लड़ाकू विमान और वायुसेना के दल अपनी परिचालन दक्षता का प्रदर्शन भी करेंगे। सैन्य विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे संयुक्त अभ्यास पायलटों को अलग-अलग परिस्थितियों में प्रशिक्षण का अवसर प्रदान करते हैं। साथ ही आधुनिक रणनीतियों, हवाई संचालन और तकनीकी अनुभवों के आदान-प्रदान से भविष्य की चुनौतियों से निपटने की क्षमता भी मजबूत होती है।

भारत पिछले कुछ वर्षों में अनेक मित्र देशों के साथ नियमित सैन्य अभ्यास करता रहा

है। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार इस तरह के अभ्यास क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग बढ़ाने, पारस्परिक विश्वास मजबूत करने और सामरिक साझेदारी को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।



में भाग लेने जा रही है। रक्षा सूत्रों के अनुसार इन अभ्यासों का उद्देश्य विभिन्न देशों की वायु सेनाओं के बीच समन्वय बढ़ाना, आधुनिक युद्ध कौशल का आदान-प्रदान करना और संयुक्त अभियान

बारिश की हर बूंद बचाने का अभियान, 'मेघ पाइन' बना जल संरक्षण का नया मॉडल

देश में बढ़ते जल संकट और लगातार गिरते भूजल स्तर के बीच वर्षा जल संरक्षण की पहलें नई उम्मीद जगा रही हैं। इन्हीं प्रयासों में 'मेघ पाइन अभियान' को एक प्रभावी मॉडल के रूप में देखा जा रहा है, जिसका उद्देश्य वर्षा की हर बूंद को सहेजकर जल सुरक्षा को मजबूत करना है। इस अभियान के तहत वर्षा जल का संग्रहण, भूजल पुनर्भरण और स्थानीय जल स्रोतों के संरक्षण पर विशेष जोर दिया जाता है।

जल विशेषज्ञों का मानना है कि जिन क्षेत्रों में भूजल तेजी से घट रहा है या सुरक्षित पेयजल की समस्या है, वहां इस तरह की पहल दीर्घकालिक समाधान का आधार बन सकती है। अभियान की विशेषता यह है कि इसमें स्थानीय समुदाय, ग्राम संस्थाएं और प्रशासन मिलकर जल संरक्षण के कार्यों में भागीदारी करते हैं। वर्षा जल को संरक्षित कर उसे जमीन में पहुंचाने के लिए विभिन्न संरचनाओं का उपयोग किया जाता है, जिससे भूजल स्तर सुधारने में मदद मिलती है। विशेषज्ञों

के अनुसार जल संकट का समाधान केवल बड़े बांधों या सरकारी योजनाओं से संभव नहीं है। वर्षा जल संचयन, जल का विवेकपूर्ण उपयोग और स्थानीय स्तर पर संरक्षण की संस्कृति



विकसित करना समय की आवश्यकता है। पर्यावरणविदों का कहना है कि यदि ऐसे मॉडल देश के अधिक से अधिक जल संकटग्रस्त क्षेत्रों में अपनाए जाएं, तो भविष्य में पेयजल संकट कम करने और भूजल भंडार को पुनर्जीवित करने की दिशा में महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

गोहद बसपा की मासिक बैठक में संगठन विस्तार पर हुई चर्चा

कार्यकर्ताओं को संगठन मजबूत करने और
बूथ स्तर तक सक्रियता बढ़ाने का आह्वान

गोहद। बहुजन समाज पार्टी के तत्वावधान में बुधवार को अंबेडकर पार्क, बस स्टैंड गोहद में मासिक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में संगठन की मजबूती, आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तथा बूथ स्तर तक पार्टी को सशक्त बनाने पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यकर्ताओं से आमजन के बीच पहुंचकर पार्टी की नीतियों और विचारधारा का व्यापक प्रचार-प्रसार करने का आह्वान किया गया। बैठक के मुख्य अतिथि जिला अध्यक्ष सुरेश बड़ैया ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि सभी से गांव-गांव और वार्ड स्तर तक संगठन को मजबूत करने, नए लोगों को पार्टी से जोड़ने तथा बहुजन समाज की समस्याओं को प्राथमिकता के साथ उठाने का आग्रह किया। बैठक में विशिष्ट अतिथि जिला कार्यकारिणी सदस्य वीरेंद्र बिजावर ने संगठनात्मक गतिविधियों की समीक्षा करते हुए आगामी कार्यक्रमों की तैयारियों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि सभी पदाधिकारी आपसी समन्वय के साथ कार्य करें और प्रत्येक बूथ पर पार्टी की सक्रिय इकाइयों का गठन सुनिश्चित करें। इस अवसर पर विधानसभा प्रभारी संजय जाटव, बालकृष्ण, सेक्टर प्रभारी



महेश चौधरी, उदय राज बैरैया, पान सिंह पहाड़िया, बलराम, राहुल बंसल सहित अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने संगठन विस्तार, सदस्यता अभियान और जनसंपर्क कार्यक्रमों को गति देने पर बल दिया। बैठक में पार्टी की आगामी रणनीति, संगठनात्मक गतिविधियों और जनहित से जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। अंत में सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने संगठन को और अधिक मजबूत बनाने तथा पार्टी की नीतियों को आमजन तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

इन्दौर : लसूडिया क्षेत्र से 14 वर्षीय नाबालिग बेटा का महीनों बाद भी नहीं लगा सुराग, पुलिस कार्रवाई से असंतुष्ट परिवार ने कलेक्टर व कमिशनर से लगाई न्याय की गुहार

सह संपादक दीपक वाड़ेकर

लसूडिया थाने में दर्ज है गुमशुदगी का मामला (क्र. 514/2026), परिजनों ने अपहरण की आशंका जताते हुए विशेष टीम गठित करने की मांग की। इन्दौर। शहर के लसूडिया थाना क्षेत्र के निरंजनपुर इलाके से एक 14 वर्षीय नाबालिग बालिका के संदिग्ध परिस्थितियों में लापता होने का गंभीर मामला सामने आया है। घटना को कई महीने बीत जाने के बावजूद पुलिस द्वारा कोई ठोस सुराग नहीं मिलने पर दुखी और डरे हुए पीड़ित परिवार ने अब जिला कलेक्टर और पुलिस कमिशनर के समक्ष पहुंचकर त्वरित कार्रवाई और न्याय की गुहार लगाई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, निरंजनपुर खालसा चौक (देवास नाका, इन्दौर) निवासी सीमा पति गौरीशंकर मालवीय

की 14 वर्षीय पुत्री कशिश मालवीय गत 6 अप्रैल 2026 को सुबह करीब 5:00 बजे घर से बिना बताए कहीं चली गई थी। परिवार और रिश्तेदारों द्वारा संभावित ठिकानों पर काफी तलाश करने के बाद भी जब उसका कोई पता नहीं चला, तब लसूडिया थाने में तत्काल गुमशुदगी दर्ज कराई गई थी (गुमशुदगी क्रमांक: 514/2026, दिनांक 06.04.2026)।



मुख्य बिंदु: लापता बालिका:

कशिश मालवीय (उम्र लगभग 14 वर्ष) घटना दिनांक: 06 अप्रैल 2026 थाना क्षेत्र: लसूडिया थाना, इन्दौर (गुमशुदगी क्र. 514/2026) परिवार की शंका: जालम सिंह केवट व अन्य परिजनों पर बहला-फुसलाकर ले जाने और छिपाने का गंभीर संदेह।

यूपीआई लेनदेन पर शुल्क लगेगा या नहीं? नए विधेयक के बाद बड़ी चर्चा



संसद में प्रस्तुत नए विधेयक के बाद डिजिटल भुगतान व्यवस्था को लेकर नई बहस शुरू हो गई है। प्रस्तावित बदलाव के चलते यह चर्चा तेज हो गई है कि भविष्य में यूपीआई के माध्यम से होने वाले कुछ लेनदेन पर शुल्क लगाने का रास्ता खुल सकता है। वित्तीय मामलों के जानकारों के अनुसार प्रस्ताव का उद्देश्य मौजूदा कानूनी व्यवस्था में बदलाव करना है। हालांकि इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी यूपीआई लेनदेन पर तुरंत शुल्क लग जाएगा। यदि भविष्य में कोई शुल्क व्यवस्था लागू की जाती है तो उसके लिए अलग नियम, अधिसूचना या नियामकीय निर्णय आवश्यक होंगे।

विशेषज्ञों का कहना है कि वर्तमान में अधिकांश सामान्य उपभोक्ताओं के लिए यूपीआई भुगतान बिना किसी शुल्क के उपलब्ध है। नए विधायी प्रावधानों के बाद भी अंतिम निर्णय सरकार, नियामक संस्थाओं और संबंधित वित्तीय तंत्र द्वारा तय किया जाएगा। बैंकिंग क्षेत्र के विश्लेषकों का मानना है कि डिजिटल भुगतान व्यवस्था का विस्तार बनाए रखना सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है। ऐसे में यदि भविष्य में किसी प्रकार का शुल्क लागू करने पर विचार होता है तो उसकी सीमा, दायरा और लागू होने की शर्तें स्पष्ट रूप से घोषित की जाएंगी।

बाजार बंद होने से पहले बदल रहा पूरा खेल, अंतिम मिनटों की चाल से बड़ी निवेशकों की चिंता

शेयर बाजार में लागू नई क्लोजिंग ऑक्शन व्यवस्था के बाद कारोबार के अंतिम मिनटों में कीमतों में तेज उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। हाल के कारोबारी सत्रों में बाजार बंद होने से ठीक पहले सूचकांकों में अचानक तेज बदलाव ने कई निवेशकों और डेरिवेटिव कारोबारियों को बड़ा झटका दिया। बाजार विशेषज्ञों के अनुसार अंतिम मिनटों में बड़ी संस्थागत खरीद-बिक्री और क्लोजिंग ऑक्शन के दौरान होने वाले सौदों का असर सूचकांकों पर अधिक दिखाई दे सकता है। इसका प्रभाव विशेष रूप से साप्ताहिक एक्सपायरी वाले विकल्प और वायदा सौदों में सक्रिय



कारोबारियों पर पड़ता है, जहां कुछ मिनटों की तेजी या गिरावट से लाभ और हानि का आंकड़ा तेजी से बदल सकता है। विश्लेषकों का कहना है कि बाजार बंद होने से पहले होने वाले उतार-चढ़ाव के कारण कई सौदों का अंतिम मूल्य निवेशकों की अपेक्षा से अलग रह सकता है। ऐसे में अधिक जोखिम लेकर किए गए अल्पकालिक

सौदों में नुकसान की संभावना भी बढ़ जाती है। वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि निवेशकों को अंतिम मिनटों की अस्थिरता को ध्यान में रखते हुए जोखिम प्रबंधन अपनाना चाहिए। बिना पर्याप्त जानकारी या केवल अचानक आई तेजी-गिरावट को देखकर निर्णय लेने से बचना बेहतर माना जाता है। बाजार के जानकारों का कहना है कि क्लोजिंग ऑक्शन व्यवस्था का उद्देश्य कारोबार को अधिक व्यवस्थित और पारदर्शी बनाना है, लेकिन इसके प्रभाव को समझे बिना अंतिम समय में की गई जल्दबाजी कई निवेशकों के लिए महंगी साबित हो सकती है।

जेनरेशन जेड बदल रही है सोने का बाजार

भारत के सोने के बाजार में नई पीढ़ी की भागीदारी तेजी से बढ़ रही है। डिजिटल तकनीक से जुड़ी जेनरेशन जेड अब सोने को केवल आभूषण के रूप में नहीं, बल्कि निवेश के एक महत्वपूर्ण माध्यम के तौर पर भी देखने लगी है। इसी बदलाव को देखते हुए बाजार विश्लेषकों का मानना है कि आने वाले वर्षों में सोने के कारोबार में बड़े अवसर पैदा हो सकते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार युवा निवेशक

पारंपरिक खरीदारी के साथ-साथ डिजिटल गोल्ड, गोल्ड ईटीएफ और अन्य निवेश विकल्पों की ओर भी आकर्षित हो रहे हैं। मोबाइल आधारित निवेश प्लेटफॉर्म और आसान डिजिटल सेवाओं ने इस वर्ग के लिए सोने में निवेश को पहले की तुलना में अधिक सरल बना दिया है। बाजार विश्लेषकों का कहना है कि जेनरेशन जेड निवेश करते समय पारदर्शिता, तरलता और कम राशि से

शुरुआत जैसे विकल्पों को महत्व देती है। यही कारण है कि डिजिटल माध्यमों से सोने में निवेश की मांग लगातार बढ़ रही है। हालांकि वित्तीय विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि किसी भी निवेश का निर्णय केवल रुझानों के आधार पर नहीं लेना चाहिए। निवेश से पहले जोखिम, निवेश अवधि, वित्तीय लक्ष्य और उपलब्ध विकल्पों का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करना आवश्यक है।

अनहद (हृदय) चक्र : निस्वार्थ प्रेम, निर्भयता और आत्मविश्वास का केंद्र

मानव के सूक्ष्म शरीर में स्थित सात प्रमुख चक्रों में चौथा चक्र अनहद या हृदय चक्र कहलाता है। यह उरोस्थि (स्टर्नम) के पीछे, मेरूरज्जु के स्तर पर स्थित है तथा इसकी बारह पंखुड़ियाँ मानी गई हैं। सहजयोग के अनुसार बाल्यावस्था में यह चक्र शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और शरीर को विभिन्न प्रकार के आक्रमणों से सुरक्षा प्रदान करने में सहायक होता है।

हृदय चक्र केवल शारीरिक स्वास्थ्य का ही नहीं, बल्कि भावनात्मक संतुलन, आत्मविश्वास और आध्यात्मिक उन्नति का भी आधार है। यह चक्र तीन भागों—दायाँ, बायाँ और मध्य—में कार्य करता है, जिनका अपना विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है।

दायाँ हृदय : श्रीराम का आदर्श

हृदय चक्र के दाएँ भाग में श्रीराम का स्थान माना गया है। श्रीराम मर्यादा, उत्तरदायित्व और

आदर्श पितृत्व के प्रतीक हैं। यदि किसी व्यक्ति के जीवन में पिता से जुड़ी पीड़ा, दूरी या मानसिक असंतुलन हो, तो इसका प्रभाव दाएँ हृदय पर पड़ सकता है। सहजयोग में श्रीराम के ध्यान द्वारा इस पक्ष को संतुलित करने का मार्ग बताया गया है।

बायाँ हृदय : मातृत्व और शिव तत्व

हृदय चक्र का बायाँ भाग मातृत्व, करुणा और भावनात्मक सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। जब किसी व्यक्ति के जीवन में मातृत्व से संबंधित भावनात्मक आघात, असुरक्षा या गहरे मानसिक तनाव उत्पन्न होते हैं, तो उनका प्रभाव इस केंद्र पर देखा जा सकता है। सहजयोग में बाएँ हृदय चक्र में श्री शिव का स्थान तथा हृदय में आत्मस्वरूप श्री सदाशिव का वास बताया गया है। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात साधक अपने भीतर स्थित इसी दिव्य चेतना का अनुभव करने लगता है।

मध्य हृदय : देवी जगदम्बा की करुणा

हृदय चक्र का मध्य भाग साक्षात् देवी



जगदम्बा का स्थान माना गया है। जब यह केंद्र असंतुलित होता है, तो व्यक्ति भय, असुरक्षा और आत्मविश्वास की कमी का अनुभव कर सकता है। किंतु इसके जागृत होने पर भीतर धैर्य, साहस,

विश्वास और निर्भयता का संचार होता है।

आत्मसाक्षात्कार के बाद जब यह चक्र प्रकाशित होता है, तब साधक के भीतर सुरक्षा की गहरी अनुभूति जागृत होती है। वह निडर, ओजस्वी तथा आत्मविश्वास से परिपूर्ण होकर जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनता है। साथ ही, हृदय में निस्वार्थ प्रेम, करुणा और सहज स्नेह का प्रवाह विकसित होता है। सहजयोग के अनुसार कुण्डलिनी दिव्य शक्ति है और चक्र आध्यात्मिक विकास की सीढ़ियाँ हैं।

इन सभी चक्रों के संतुलन और जागरण के माध्यम से साधक अंततः हृदय में स्थित शिव तत्व का अनुभव करता है। हृदय चक्र की शुद्धता और जागृति से जीवन में प्रेम, संतुलन, आत्मविश्वास और आध्यात्मिक आनंद का विकास होता है। सहजयोग पूर्णतः निःशुल्क है और अत्यंत सरल भी। निकटतम सहजयोग ध्यान केंद्र की जानकारी के लिए टोल-फ्री नंबर 1800 2700 800 पर संपर्क करें।

विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एवं आजीविका मिशन (ग्रामीण) योजना के तहत हुई कार्यशाला



नवल किशोर

कटनी। विकसित भारत-जी राम जी (VB - G RAM G) योजना के संबंध में जन जागरूकता, व्यापक प्रचार प्रसार एवं गहन जानकारी देने के उद्देश्य से जिला पंचायत के सभाकक्ष में प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन जिला पंचायत सीईओ सुश्री हरसिमरनप्रीत कौर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। अवगत होवे कि यह जन हितैषी योजना पूरे देश में 1 जुलाई 2026 से लागू हो चुकी है। सुश्री कौर ने जनपद स्तरीय अधिकारियों से रूबरू संवाद करते हुए विकसित भारत-जी राम जी योजना का फीडबैक जनपद पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों, अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी एवं तकनीकी अमले से

लिया। इस दौरान सुश्री कौर ने विकसित भारत-जी राम जी योजना के कानून, नियमों और प्रावधानों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस योजना में सूचना, पारदर्शिता और जवाब देही के साथ ग्रामीण नागरिकों को वर्ष में 125 दिन की रोजगार की गारंटी के साथ, बेरोजगारी भत्ता, मुआवजा और क्षतिपूर्ति का प्रावधान है। ग्रामीण जनों के लिए 300 न्यूनतम मजदूरी और रोजगार हासिल करने का बेहतर समाधान है। उन्होंने बताया कि श्रमिक के खाते में साप्ताहिक भुगतान किया जाएगा।

परियोजना अधिकारी ऋषिराज चढ़ार ने चार विषयगत स्तंभ के अंतर्गत जल सुरक्षा, मुख्य ग्रामीण अव संरचना, आर्थिक संपत्ति एवं आपदा न्यूनीकरण

कार्य के अंतर्गत कराए जाने वाले कार्यों के संबंध में अवगत कराया। श्री चढ़ार ने विकसित ग्राम पंचायत योजना, जागरूकता, हकदारियों और गारंटियों के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि यह योजना ग्रामीण रोजगार की गारंटी, समय पर रोजगार उपलब्ध कराने की गारंटी, बेरोजगार भत्ता की गारंटी, समय पर मजदूरी भुगतान की गारंटी, समान कार्य के लिए समान मजदूरी की गारंटी, सुरक्षित कार्यस्थल एवं मूलभूत सुविधाओं की गारंटी, सामाजिक अंकेक्षण एवं जनसुनवाई का अधिकार, शिकायत निवारण का अधिकार सूचना, पारदर्शिता एवं जवाब देही का अधिकार देती है।

इस दौरान अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी अनुराग मोदी, प्रभारी कार्य पालन यंत्री मेघा मौर्य, परियोजना अधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह, सहायक परियोजना अधिकारी विजयलक्ष्मी मरावी मृगेंद्र सिंह मीडिया प्रभारी योगेंद्र कुमार असाटी, जनपद पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, तकनीकी अधिकारी एवं अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

अमृत हरित महाअभियान: खनियांधाना नगर परिषद ने विद्युत मंडल में किया वृहद पौधरोपण, पर्यावरण बचाने का लिया संकल्प

अतुल जैन

खनियांधाना। नगर को स्वच्छ, सुंदर और हरा-भरा बनाने के उद्देश्य से नगर परिषद खनियांधाना द्वारा मंगलवार को विद्युत मंडल परिसर में 'अमृत हरित महाअभियान' के तहत वृहद पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। अभियान के दौरान अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और कर्मचारियों ने मिलकर बड़ी संख्या में पौधे लगाए और उनके संरक्षण का संकल्प लिया।

सीएमओ ने की अभियान की शुरुआत- कार्यक्रम में मुख्य रूप से नगर परिषद के मुख्य नगरपालिका अधिकारी आशुतोष त्रिपाठी उपस्थित रहे। उन्होंने स्वयं पौधा रोपकर अभियान की शुरुआत की। इस दौरान उन्होंने कहा कि 'अमृत हरित महाअभियान' का मुख्य उद्देश्य नगर को स्वच्छ, सुंदर और हरित बनाना है। पर्यावरण की सुरक्षा केवल सरकार की नहीं बल्कि हर नागरिक की जिम्मेदारी है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए और उसकी तब तक देखभाल करनी चाहिए जब तक वह बड़ा पेड़ न बन जाए। सीएमओ ने सभी से अपील की कि वे अधिक से अधिक संख्या में पौधे लगाएं और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में सहयोग करें।



“यह औपचारिकता नहीं, पीढ़ियों के भविष्य की नींव” - हिमांशु झा- इस अवसर पर नगर परिषद के वरिष्ठ पार्षद हिमांशु झा ने कहा कि वृक्षारोपण केवल एक औपचारिकता नहीं है, बल्कि यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य की नींव है। आज हम जिस प्रकार पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हैं, उसका खामियाजा आने वाली पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगा। प्रकृति को हरा-भरा रखना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। उन्होंने आगे कहा कि नगर परिषद का यह प्रयास तभी पूरी तरह सफल होगा, जब नगर का प्रत्येक नागरिक इस अभियान से जुड़ेगा और लगाए गए पौधों की देखभाल अपने परिवार के सदस्य की तरह करेगा। पौधा लगाने के साथ-साथ उसे बचाना भी जरूरी है।

जनप्रतिनिधि और कर्मचारी हुए शामिल- पौधरोपण कार्यक्रम में भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के जिलाध्यक्ष सत्य प्रकाश भारदेनिया सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

दीप प्रज्वलित के साथ कांग्रेस का प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ

नवल किशोर

कटनी। जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। शिविर में संगठन की विचारधारा, जनहित से जुड़े मुद्दों तथा संगठनात्मक मजबूती पर विस्तार से चर्चा की गई। वक्ताओं ने कहा कि प्रशिक्षण का उद्देश्य कार्यकर्ताओं को अधिक सक्रिय, जागरूक और जनसेवा के प्रति समर्पित



बनाना है, ताकि वे आमजन की समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठाकर संगठन को और मजबूत बना सकें। इस दौरान संगठन के पदाधिकारियों ने लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा, जनहित के मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभाने तथा कांग्रेस की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सशक्त संगठन ही जनता की आवाज को प्रभावी ढंग से बुलंद कर सकता है।

लाल पहाड़ी बनेगी कटनी शहर की “ग्रीन लंग”, 4500 से अधिक पौधों से संवर रही हरियाली की नई पहचान

पर्यावरण संरक्षण को जन आंदोलन बनाने का निगम प्रशासन का संकल्प निगम प्रशासन ने नागरिकों से की पौधारोपण अभियान में सहभागी बनने की अपील

नवल किशोर

कटनी। स्वच्छ, स्वस्थ एवं हरित कटनी के निर्माण के संकल्प को साकार करने की दिशा में नगर पालिक निगम कटनी द्वारा बरगवां स्थित लाल पहाड़ी क्षेत्र में व्यापक पौधारोपण अभियान निरंतर गति पकड़ रहा है। निगमायुक्त सुश्री तपस्या परिहार के मार्गदर्शन में संचालित इस अभियान के माध्यम से अब तक 4 हजार 500 से अधिक विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपित किए जा चुके हैं। निगम का उद्देश्य केवल वृक्षारोपण तक सीमित नहीं है, बल्कि लाल पहाड़ी को विकसित कर कटनी की प्राकृतिक “ग्रीन लंग” के रूप में स्थापित करना है, जिससे शहर को स्वच्छ वायु, संतुलित पर्यावरण और समृद्ध हरित विरासत प्राप्त हो सके।



जनभागीदारी से सज रही लाल पहाड़ी

इस जनभागीदारी आधारित अभियान में जनप्रतिनिधियों, स्कूली छात्र-छात्राओं, सामाजिक एवं स्वयंसेवी संगठनों के साथ शासकीय अधिकारी-कर्मचारी उत्साहपूर्वक सहभागी बन रहे हैं। नीम, पीपल, बरगद, सागौन सहित छायादार, फलदार एवं औषधीय प्रजातियों के पौधों का रोपण कर

बंजर पहाड़ी को हरियाली की नई पहचान देने का कार्य किया जा रहा है। निगम प्रशासन द्वारा पौधों के संरक्षण एवं नियमित देखरेख की भी समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है, ताकि प्रत्येक पौधा भविष्य में विशाल वृक्ष का स्वरूप धारण कर सके।

पर्यावरण संरक्षण का सामूहिक संदेश

निगमायुक्त सुश्री तपस्या परिहार

ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल शासकीय दायित्व नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की साझा जिम्मेदारी है। आज लगाया गया एक पौधा आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ हवा, बेहतर जल संरक्षण और संतुलित जलवायु का अमूल्य उपहार देगा। उन्होंने कहा कि बढ़ती गर्मी, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों का सबसे प्रभावी समाधान व्यापक वृक्षारोपण और उनके संरक्षण में ही निहित है।

नागरिक बनें “हरियाली के सारथी”

उन्होंने शहरवासियों से आह्वान किया कि वे निगम कार्यालय से संपर्क कर निगम द्वारा चिन्हित स्थलों पर पौधारोपण अभियान का हिस्सा बनें। इच्छुक नागरिकों, संस्थाओं एवं सामाजिक संगठनों को नगर निगम द्वारा पौधे, रोपण की आवश्यक व्यवस्था तथा तकनीकी मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाएगा, ताकि अधिक से अधिक लोग इस हरित अभियान से जुड़ सकें।

निगम का लक्ष्य हर वार्ड में हो हरियाली

नगर निगम लाल पहाड़ी के साथ-साथ शहर के विभिन्न वार्डों, सार्वजनिक स्थलों, शासकीय विद्यालयों, उद्यानों, सड़क किनारे एवं अन्य उपयुक्त स्थानों पर भी वृक्षारोपण को निरंतर बढ़ावा दे रहा है। निगम का विश्वास है कि जनसहभागिता से संचालित यह अभियान न केवल कटनी की हरित पहचान को सशक्त करेगा, बल्कि स्वच्छ सर्वेक्षण के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी कटनी को प्रदेश के अग्रणी शहरों की श्रेणी में स्थापित करेगा। “एक पौधा-एक जीवन” के संदेश के साथ नगर निगम हर नागरिक को इस हरित अभियान का सहभागी बनने का आमंत्रण दे रहा है।

शिवपुरी में चेहल्लुम शरीफ पर दिखी अनूठी गंगा-जमुनी तहजीब, आपसी भाईचारे की मिसाल बना शहर

त्रिषि गोस्वामी

शिवपुरी: जिले में चेहल्लुम शरीफ के अवसर पर हर साल की तरह इस बार भी देश की साझी संस्कृति और आपसी भाईचारे की अनूठी ‘गंगा-जमुनी तहजीब’ की एक बेहद खूबसूरत तस्वीर देखने को मिली। इस पावन अवसर पर दोनों समुदायों के लोगों ने बढ़-चढ़कर एक-साथ शिरकत की और सौहार्द का संदेश दिया। शिवपुरी की यह मिसाल पूरे देश में आपसी प्रेम और एकता का एक बेहतरीन उदाहरण पेश करती है। चेहल्लुम शरीफ के दौरान मुस्लिम समाज द्वारा ताजिए के जुलूस में शामिल हुए सभी अतिथियों का फूल-माला पहनाकर और पगड़ी बांधकर भव्य स्वागत और सम्मान किया गया। मेहमानवाजी की यह दिल को छू लेने वाली परंपरा यहां बरसों से चली आ रही है, जो शहर के आपसी सौहार्द को और अधिक मजबूत करती है। आयोजन के दौरान पुरानी शिवपुरी इमामवाड़ा, तकिया मस्जिद, नीलगर चौराहा, पुराना बस स्टैंड, पुरानी शिवपुरी, कमलागंज, घोसीपुरा, छावनी, साईंसपुरा और



है, जो शहर के आपसी सौहार्द को और अधिक मजबूत करती है। आयोजन के दौरान पुरानी शिवपुरी इमामवाड़ा, तकिया मस्जिद, नीलगर चौराहा, पुराना बस स्टैंड, पुरानी शिवपुरी, कमलागंज, घोसीपुरा, छावनी, साईंसपुरा और

महल रोड सहित शहर के विभिन्न प्रमुख मार्गों से ताजियों के जुलूस निकाले गए। इस अवसर पर शहर काजी वलीउद्दीन सिद्दीकी, पोहरी विधायक कैलाश कुशवाहा, रामजी व्यास, शशि शर्मा, नलिन भार्गव, हेमू शर्मा, आशीष शर्मा, जुबेर खान, चाँद खान, सुहैल खान, फ़ारूख राईन, सराफ़त राईन, जुनैद अफ़ग़ानी, अपपल खान, सबदर बेग, मिर्जा अशरफ खान, अन्रू खान, समीर खान, पप्पू खान, इरशाद खान, खैरा खान, जाहिद खान, कामिल खान, इस्माइल खान, रहीस खान सहित शहर के तमाम गणमान्य नागरिक और बड़ी संख्या में आमजन मौजूद रहे। समस्त ताजिया आयोजकों और मुस्लिम समाज द्वारा सभी अतिथियों को दिए गए इस स्नेह और सम्मान के लिए दिल से आभार व्यक्त किया गया है।

मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान-2026 : हर शुक्रवार होगा जन-संवाद, मौके पर होगा समस्याओं का समाधान खितौली के पंचायत भवन में 7 अगस्त को होगा पहला कार्यक्रम

नवल किशोर

कटनी। क्षेत्र भ्रमण, निरीक्षण एवं जन-संवाद के माध्यम से आम जनता की शिकायतों का त्वरित निराकरण, शासकीय योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की मॉनिटरिंग तथा लोक सेवाओं को समय-सीमा में उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य शासन द्वारा शुक्रवार, 7 अगस्त से “मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान-2026” प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया है। जिले में इस अभियान के सफल क्रियान्वयन हेतु कलेक्टर आशीष तिवारी ने नोडल अधिकारियों की नियुक्ति की है।

ग्रामीण क्षेत्रों के लिए जिला पंचायत सीईओ हरसिमरनप्रीत कौर तथा नगरीय क्षेत्रों के लिए नगर निगम आयुक्त तपस्या परिहार को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। कलेक्टर श्री तिवारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि

मुख्यमंत्री जन विश्वास अभियान-2026 के अंतर्गत साप्ताहिक भ्रमण कार्यक्रम को प्रभावी रूप से लागू करने सभी अधिकारी भ्रमण के दौरान जनसमस्याओं के त्वरित निराकरण और योजनाओं के जमीनी क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान दें। उन्होंने सीएम हेल्पलाइन एवं जनसुनवाई में लंबित शिकायतों तथा लोक सेवा गारंटी अधिनियम के प्रकरणों का शत-प्रतिशत निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। यह अभियान शुक्रवार, 7 अगस्त 2026 से प्रारंभ होकर 08 जनवरी 2027 तक संचालित किया जाएगा। इस अवधि में प्रत्येक सप्ताह के पंचम दिवस अर्थात् शुक्रवार को अभियान का आयोजन किया जाएगा। निर्धारित दिवस पर जिला प्रशासन के अधिकारी चिन्हित क्षेत्रों का अनिवार्य रूप से भ्रमण एवं निरीक्षण करेंगे। जिले में अभियान का शुभारंभ विजयराघवगढ़ विधानसभा अंतर्गत पंचायत भवन खितौली से होगा।

कागजों तक सीमित निगरानी: सहायक आयुक्त की ढिलाई से ठेकेदारों के हौसले बुलंद, घटिया निर्माण पर मौन विभाग

लाखों के बजट पर अफसरों की चुप्पी: जनजातीय विभाग के सहायक आयुक्त का निर्माण कार्यों पर नहीं कोई नियंत्रण

महेंद्र मालवीय। स्वच्छ भारत अभियान और 'स्वच्छ विद्यालय' के बड़े-बड़े प्रशासनिक दावों की धरातलीय हकीकत मानसून की पहली ही बारिश में पानी-पानी हो गई। आदिम जाति कल्याण विभाग के अंतर्गत आने वाले ग्राम अंबाडा के शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल और ग्राम सारोला के शासकीय हाई स्कूल से घटिया निर्माण और प्रशासनिक अनदेखी का एक बेहद गंभीर मामला सामने आया है। कहीं पहली ही बारिश में नए बने शौचालय और मरम्मत किए गए कमरों की छतों से पानी टपक रहा है, तो कहीं छात्र नदी किनारे खुले में शौच जाने को मजबूर हैं।

मामला 1: अंबाडा शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल

450 से अधिक विद्यार्थियों पर मंडराया खतरा, अधूरे शौचालय में टपका पानी अंबाडा स्थित शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल में 450 से अधिक छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। यहां विभाग द्वारा बनाए जा रहे बालक एवं बालिका शौचालय का कार्य न केवल अधूरा छोड़ दिया गया,



बल्कि पहली ही बारिश में इसकी छत से पानी रिसने लगा। निर्माण में घटिया सामग्री का इस्तेमाल: पूर्व जिला पंचायत उपाध्यक्ष अरुण पाटील का आरोप है कि ठेकेदार द्वारा निर्माण में अत्यंत घटिया सामग्री का उपयोग किया गया है। दीवारों पर प्लास्टर सही नहीं है और छत की फिनिशिंग तक पूरी नहीं की गई। परिसर बना हादसों का केंद्र: स्कूल परिसर में निर्माण सामग्री बेतरतीब ढंग से फैली हुई है। बारिश के कारण फैली कीचड़ और मलबे से बच्चों के फिसलने और घायल होने की आशंका बनी रहती है।

मामला 2: सारोला शासकीय हाई स्कूल

शौचालय के अभाव में नदी किनारे जाने को मजबूर छात्र, मंडराया बड़े हादसे का डर ग्राम सारोला के शासकीय हाई स्कूल की स्थिति इससे भी अधिक चिंताजनक है। यहां आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा कराए जा रहे मरम्मत कार्य की पहली ही बारिश में कलई खुल गई। जर्जर भवन और सीलन भरी कक्षाएं: कक्षा 9वीं और 10वीं सहित स्कूल के 7 कमरों, प्राचार्य कक्ष, स्टाफ रूम और प्रैक्टिकल

लैब की छत से लगातार पानी टपक रहा है। दीवारों में सीलन आ गई है और प्लास्टर उखड़कर गिर रहा है। सुरक्षा व्यवस्था शून्य, 100 मीटर दूर उतावली नदी: सारोला में छात्राओं के लिए बन रहा नया शौचालय अधूरा है, जबकि बालकों के लिए शौचालय का निर्माण तक नहीं कराया गया है। मजबूरी में छात्र और शिक्षक खुले में शौच जाने को विवश हैं। स्कूल से महज 100 मीटर की दूरी पर उतावली नदी है। बिना बाउंड्रीवाल वाले इस परिसर से बारिश और तूफान के समय उफनती नदी के पास बच्चों का जाना किसी बड़े हादसे को आमंत्रण दे रहा है।

पढ़ाई ठप, शैक्षणिक सामग्री के खराब होने का खतरा

शिक्षकों के अनुसार, छतों से पानी टपकने और फर्श पर जलभराव होने के कारण लगातार कक्षाएं बदलनी पड़ रही हैं। इससे बच्चों की पढ़ाई बुरी तरह प्रभावित हो रही है। साथ ही, कमरों में रखे बिजली के उपकरणों और महत्वपूर्ण शैक्षणिक दस्तावेजों के खराब होने का भी खतरा पैदा हो गया है।

ग्रामीणों और अभिभावकों का आक्रोश

अभिभावकों और ग्रामीणों ने शासन-प्रशासन के खिलाफ कड़ा असंतोष

व्यक्त करते हुए मांग की है कि: आदिम जाति कल्याण विभाग के अंतर्गत हुए इन निर्माण और मरम्मत कार्यों की तत्काल तकनीकी जांच कराई जाए। घटिया निर्माण और कार्य अधूरा छोड़ने वाली ठेकेदार/निर्माण एजेंसी को ब्लैकलिस्ट कर वैधानिक कार्रवाई की जाए। बालक-बालिका शौचालय का निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण कराकर स्कूल परिसर में बाउंड्रीवाल बनाई जाए। इस विषय पर जब संकुल प्रभारी से बात की गई तो उन्होंने बताया कि जनजातीय विभाग के अंतर्गत ये निर्माण कार्य हो रहे हैं। इनकी मॉनिटरिंग विभाग द्वारा की जा रही है।

जिम्मेदार साध रहे चुप्पी, फोन काटा

इस पूरे मामले में जब पक्ष जानने के लिए जनजातीय कार्य विभाग के सहायक आयुक्त भरत जांचपुरे से उनके मोबाइल नंबर पर फोन के माध्यम से संपर्क करने का प्रयास किया गया, तो उन्होंने विषय सुनने के पहले ही फोन काट दिया। इसके बाद बार-बार प्रयास करने पर भी उन्होंने कॉल रिसीव नहीं की। जिम्मेदार अधिकारी का इस तरह मीडिया के सवालों से बचना और चुप्पी साधना कई गंभीर सवाल खड़े करता है। इससे यह साफ जाहिर होता है कि विभाग निर्माण कार्यों की गुणवत्ता और विद्यार्थियों की सुरक्षा को लेकर कितना संवेदनशील है।

कागजों तक सीमित निगरानी: सहायक आयुक्त की ढिलाई से ठेकेदारों के हौसले बुलंद, घटिया निर्माण पर मौन विभाग

महेंद्र मालवीय

स्वच्छ भारत अभियान और 'स्वच्छ विद्यालय' के बड़े-बड़े प्रशासनिक दावों की धरातलीय हकीकत मानसून की पहली ही बारिश में पानी-पानी हो गई। आदिम जाति कल्याण विभाग के अंतर्गत आने वाले ग्राम अंबाडा के शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल और ग्राम सारोला के शासकीय हाई स्कूल से घटिया निर्माण और प्रशासनिक अनदेखी का एक बेहद गंभीर मामला सामने आया है। कहीं पहली ही बारिश में नए बने शौचालय और मरम्मत किए गए कमरों की छतों से पानी टपक रहा है, तो कहीं छात्र नदी किनारे खुले में शौच जाने को मजबूर हैं।

मामला 1: अंबाडा शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल- 450 से अधिक विद्यार्थियों पर मंडराया खतरा, अधूरे शौचालय में टपका पानी अंबाडा स्थित शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल में 450 से अधिक छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। यहां विभाग द्वारा बनाए जा रहे बालक एवं बालिका शौचालय का कार्य न केवल अधूरा छोड़ दिया गया, बल्कि पहली ही बारिश में इसकी

छत से पानी रिसने लगा।

निर्माण में घटिया सामग्री का इस्तेमाल: पूर्व जिला पंचायत उपाध्यक्ष अरुण पाटील का आरोप है कि ठेकेदार द्वारा निर्माण में अत्यंत घटिया सामग्री का उपयोग किया गया है। दीवारों पर प्लास्टर सही नहीं है और छत की फिनिशिंग तक पूरी नहीं की गई।

परिसर बना हादसों का केंद्र: स्कूल परिसर में निर्माण सामग्री बेतरतीब ढंग से फैली हुई है। बारिश के कारण फैली कीचड़ और मलबे से बच्चों के फिसलने और घायल होने की आशंका बनी रहती है।

मामला 2: सारोला शासकीय हाई स्कूल- शौचालय के अभाव में नदी किनारे जाने को मजबूर छात्र, मंडराया बड़े हादसे का डर ग्राम सारोला के शासकीय हाई स्कूल की स्थिति इससे भी अधिक चिंताजनक है। यहां आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा कराए जा रहे मरम्मत कार्य की पहली ही बारिश में कलई खुल गई। जर्जर भवन और सीलन भरी कक्षाएं: कक्षा 9वीं और 10वीं सहित स्कूल के 7 कमरों, प्राचार्य कक्ष, स्टाफ रूम और

प्रैक्टिकल लैब की छत से लगातार पानी टपक रहा है। दीवारों में सीलन आ गई है और प्लास्टर उखड़कर गिर रहा है। सुरक्षा व्यवस्था शून्य, 100 मीटर दूर उतावली नदी: सारोला में छात्राओं के लिए बन रहा नया शौचालय अधूरा है, जबकि बालकों के लिए शौचालय का निर्माण तक नहीं कराया गया है। मजबूरी में छात्र और शिक्षक खुले में शौच जाने को विवश हैं। स्कूल से महज 100 मीटर की दूरी पर उतावली नदी है। बिना बाउंड्रीवाल वाले इस परिसर से बारिश और तूफान के समय उफनती नदी के पास बच्चों का जाना किसी बड़े हादसे को आमंत्रण दे रहा है। पढ़ाई ठप, शैक्षणिक सामग्री के खराब होने का खतरा- शिक्षकों के अनुसार, छतों से पानी टपकने और फर्श पर जलभराव होने के कारण लगातार कक्षाएं बदलनी पड़ रही हैं। इससे बच्चों की पढ़ाई बुरी तरह प्रभावित हो रही है। साथ ही, कमरों में रखे बिजली के उपकरणों और महत्वपूर्ण शैक्षणिक दस्तावेजों के खराब होने का भी खतरा पैदा हो गया है।

शिवपुरी में मजदूरों से मारपीट और तोड़फोड़ मामले में दो आरोपी गिरफ्तार, न्यायालय ने भेजा जेल

शिवपुरी, कोतवाली पुलिस ने फैजाबाद (उत्तर प्रदेश) के मजदूरों के साथ घर में घुसकर मारपीट, गाली-गलौज और तोड़फोड़ करने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और गवाहों के बयानों के आधार पर आरोपियों की पहचान कर यह कार्रवाई की। पुलिस के अनुसार, 03 अगस्त 2026 को फरियादी अंकित कुमार (36 वर्ष), निवासी हुसैनगंज, थाना पटरंगा, जिला फैजाबाद उत्तर प्रदेश ने थाना कोतवाली में शिकायत दर्ज कराई थी कि कुछ अज्ञात लोगों ने घर में घुसकर उनके साथ मारपीट की और तोड़फोड़ की। फरियादी की रिपोर्ट पर थाना कोतवाली में अपराध क्रमांक 590/26 दर्ज कर भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 331(6), 296(ए), 115(2), 324(2) और 3(5) के तहत मामला पंजीबद्ध कर जांच शुरू की गई। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक शिवपुरी यांगचेन डोलकर भूटिया के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामदास प्रजापति और वही नगर पुलिस अधीक्षक सचिन कुमार धुर्वे के मार्गदर्शन में थाना कोतवाली प्रभारी निरीक्षक रोहित दुबे के नेतृत्व में

विशेष टीम गठित की गई। पुलिस टीम ने घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच की और गवाहों से मिली जानकारी के आधार पर आरोपियों की पहचान की। इसके बाद पुलिस ने अभिषेक खटीक (22 वर्ष), निवासी दुबे नर्सरी के पास, शिवपुरी और संदीप शर्मा (23 वर्ष), निवासी आशीर्वाद हॉस्पिटल के पास, फतेहपुर रोड, शिवपुरी को गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपियों को 05 अगस्त 2026 को गांधी पार्क मानस भवन के पास से पकड़ा गया। पुलिस ने आरोपियों को न्यायालय में पेश किया, जहां से जेल वारंट जारी होने के बाद उन्हें जेल भेज दिया गया। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, इस मामले में शामिल अन्य आरोपियों की पहचान भी कर ली गई है और उनकी गिरफ्तारी के प्रयास जारी हैं।

गिरफ्तारी में इन पुलिसकर्मियों की रही महत्वपूर्ण भूमिका: निरीक्षक रोहित दुबे (थाना प्रभारी, थाना कोतवाली), उपनिरीक्षक अरविन्द छारी, उपनिरीक्षक आदित्य प्रताप सिंह राजावत, उपनिरीक्षक सुमित शर्मा, उपनिरीक्षक मुरारी यादव, उपनिरीक्षक विवेक भट्ट, आरक्षक 767 अजीत राजावत और आरक्षक 631 अजय यादव।

बच्चे के लिए क्यों अमृत समान है मां का दूध? जानिए इसके वैज्ञानिक फायदे

जन्म के बाद नवजात शिशु के लिए मां का दूध सबसे संपूर्ण और प्राकृतिक आहार माना जाता है। शिशु रोग विशेषज्ञों के अनुसार इसमें ऐसे पोषक तत्व, प्रतिरक्षा देने वाले तत्व और एंटीबॉडी मौजूद होते हैं, जो बच्चे के शारीरिक और मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेषज्ञ बताते हैं कि जन्म के तुरंत बाद निकलने वाला गाढ़ा पीला दूध, जिसे कोलोस्ट्रम कहा जाता है, नवजात के लिए बेहद लाभकारी होता है। यह बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करने, संक्रमण से बचाने और पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाने में मदद करता है।

मां का दूध बच्चे की जरूरत के अनुसार बदलता रहता है। इसमें प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज और पर्याप्त मात्रा में पानी होता है, जिससे अलग से पानी पिलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। यह शिशु



के मस्तिष्क के विकास और स्वस्थ वजन बढ़ाने में भी सहायक माना जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार स्तनपान केवल बच्चे के लिए ही नहीं, बल्कि मां के स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है। इससे प्रसव के बाद गर्भाशय सामान्य आकार में लौटने में मदद मिलती है, अत्यधिक रक्तस्राव का खतरा कम हो सकता है और लंबे समय में स्तन तथा अंडाशय के कुछ प्रकार के कैंसर का जोखिम भी कम होने से जुड़ा पाया गया है। डॉक्टरों की सलाह है कि जन्म के पहले घंटे के भीतर स्तनपान शुरू किया जाए और जीवन के पहले छह महीनों तक शिशु को केवल मां का दूध ही दिया जाए। इसके बाद पूरक आहार शुरू करते हुए भी दो वर्ष या उससे अधिक समय तक स्तनपान जारी रखा जा सकता है। इससे मां और बच्चे दोनों को लंबे समय तक स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं।

नाखून का आधा चांद क्या बताता है? हार्ट और किडनी की सेहत का संकेत या सिर्फ भ्रम



हाथों के नाखूनों के निचले हिस्से में दिखाई देने वाला सफेद आधा चांद, जिसे चिकित्सा भाषा में लुनुला (Lunula) कहा जाता है, लंबे समय से लोगों की जिज्ञासा का विषय रहा है। कई लोग इसे भाग्य, धन या बीमारी का संकेत मानते हैं, लेकिन चिकित्सा विज्ञान की राय इससे अलग है। विशेषज्ञों के अनुसार, लुनुला नाखून के बढ़ने वाले हिस्से का सामान्य भाग है। इसका आकार और दिखाई देना व्यक्ति की उम्र, आनुवंशिक बनावट और नाखून की संरचना पर निर्भर करता है। सभी लोगों में यह समान रूप से दिखाई दे, यह जरूरी नहीं है। हालांकि कुछ मामलों में लुनुला के आकार या रंग में अचानक बदलाव शरीर में किसी बीमारी का संकेत हो सकता है। यदि सभी नाखूनों से लुनुला अचानक गायब हो जाए, उसका रंग नीला, लाल या काला दिखाई देने लगे, या नाखूनों के साथ सूजन, कमजोरी या अन्य लक्षण भी हों, तो यह एनीमिया, किडनी रोग, हृदय संबंधी समस्या, थायरॉयड विकार या रक्त संचार की गड़बड़ी जैसी स्थितियों से जुड़ा हो सकता है। लेकिन केवल लुनुला के आधार पर किसी बीमारी का निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। हृदय और किडनी की बीमारियों की पहचान के लिए डॉक्टर रक्त जांच, रक्तचाप, ईसीजी, इको, क्रिएटिनिन, यूरिन जांच और अन्य चिकित्सीय परीक्षणों को अधिक विश्वसनीय मानते हैं। इसलिए नाखून का आधा चांद बीमारी का निश्चित प्रमाण नहीं, बल्कि जरूरत पड़ने पर आगे की जांच का एक संकेत भर हो सकता है। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि यदि नाखूनों में अचानक बदलाव के साथ सांस फूलना, पैरों में सूजन, लगातार थकान, सीने में दर्द या पेशाब से जुड़ी परेशानी भी हो, तो स्वयं निष्कर्ष निकालने के बजाय तुरंत चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

बिना वजह वजन कम होना और भूख घटना, कब हो सकते हैं गंभीर बीमारी के संकेत?

बिना किसी प्रयास के अचानक वजन कम होना या लंबे समय तक भूख न लगना ऐसी समस्याएं हैं जिन्हें सामान्य मानकर टालना ठीक नहीं है। विशेषज्ञों के अनुसार कई बार ये लक्षण गंभीर बीमारियों, जिनमें कुछ प्रकार के कैंसर भी शामिल हैं, का शुरुआती संकेत हो सकते हैं। कैंसर विशेषज्ञों का कहना है कि शरीर में कैंसर कोशिकाओं के बढ़ने से ऊर्जा की खपत बढ़

नहीं है।

डॉक्टर बताते हैं कि थायरॉयड की गड़बड़ी, मधुमेह, संक्रमण, लीवर या पाचन तंत्र की बीमारियां, मानसिक तनाव और कुछ अन्य स्वास्थ्य समस्याओं में भी बिना वजह वजन कम हो सकता है। इसलिए केवल इन लक्षणों के आधार पर कैंसर की पुष्टि नहीं की जा सकती। यदि कुछ सप्ताह या महीनों में बिना डाइटिंग या व्यायाम के

वजन लगातार कम हो रहा हो, भूख लंबे समय तक न लग रही हो, साथ में लगातार थकान, खून आना, दर्द, गांठ, निगलने में कठिनाई या लगातार खांसी जैसे लक्षण भी हों, तो चिकित्सकीय जांच कराना आवश्यक है। विशेषज्ञों का कहना है कि समय पर जांच से बीमारी का जल्द पता लगाया जा सकता



सकती है, जिससे वजन तेजी से घटने लगता है। कई मरीजों में लगातार भूख कम लगना, कमजोरी, थकान और शरीर का क्षीण होना भी देखा जाता है। हालांकि ये लक्षण केवल कैंसर तक सीमित

है, जिससे उपचार की सफलता की संभावना भी बढ़ जाती है। इसलिए ऐसे संकेतों को नजरअंदाज करने के बजाय डॉक्टर की सलाह लेकर आवश्यक जांच कराना सबसे सुरक्षित कदम है।

रसगुल्ले का आविष्कार

नई दिल्ली। एक समय था जब वैदिक परंपरा ज्यादा चलन में थी और फटा हुआ दूध शुभ नहीं माना जाता था, लेकिन बंगाल इसमें अपवाद साबित हुआ और उसने इस परंपरा को बदला। तभी तो छेना और रसगुल्ला भारतीय मिठाइयों का हिस्सा बना। आज हम इन्हीं मिठाइयों की राजधानी कहे जाने वाले बंगाल की बात करेंगे और जानेंगे कि आखिर कैसे बंगालियों ने छेना बनाना सीखा और रसगुल्ले की क्रांति हुई। छेना कैसे बना बंगाल का हिस्सा? कहा जाता है कि फटे दूध से छेना बनाने की यह कला बंगालियों ने पुर्तगालियों से सीखी थी। 16 वीं शताब्दी में जब पुर्तगालियों ने सेरमपुर में अपना अड्डा बनाया, उस समय बंगालियों से ही उनका संपर्क बढ़ा था। पुर्तगालियों के खानपान में पनीर और चीज खासतौर से शामिल थी, इसी को देखकर बंगाल के लोगों ने दूध में नींबू के रस जैसा एसिड डालकर छेना बनाना सीखा और रसगुल्ले का आविष्कार हुआ।

मानसून में क्यों बढ़ जाता है जोड़ों का दर्द? मौसम बदलते ही क्यों बढ़ती है परेशानी

बारिश का मौसम आते ही कई लोगों को घुटनों, कंधों, कमर और अन्य जोड़ों में दर्द, जकड़न और सूजन की शिकायत बढ़ने लगती है। खासकर गठिया या पुराने जोड़ों के रोग से पीड़ित लोगों में यह समस्या अधिक देखी जाती है। हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञों के अनुसार मानसून के दौरान वायुमंडलीय दबाव में बदलाव, बढ़ी हुई नमी और तापमान में गिरावट शरीर के जोड़ों और आसपास की मांसपेशियों को प्रभावित कर सकती है। इससे पहले से सूजन वाले जोड़ों में दर्द और अकड़न अधिक महसूस होने लगती है। बारिश के मौसम में धूप कम मिलने और शारीरिक गतिविधि घटने से भी मांसपेशियां कमजोर पड़ सकती हैं, जिससे जोड़ों पर अतिरिक्त दबाव

पड़ता है। लंबे समय तक एक ही जगह बैठे रहने या व्यायाम न करने से दर्द और बढ़ सकता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि मौसम सीधे तौर पर हर व्यक्ति में जोड़ों की बीमारी पैदा नहीं करता, लेकिन जिन लोगों को पहले से ऑस्टियोआर्थराइटिस, रूमेटॉयड आर्थराइटिस या पुराने जोड़ों की चोट की समस्या है, उनमें मानसून के दौरान लक्षण अधिक स्पष्ट हो सकते हैं। डॉक्टर सलाह देते हैं कि इस मौसम में नियमित हल्का व्यायाम करें, शरीर को गर्म रखें, पर्याप्त पानी पिएं, वजन नियंत्रित रखें और दर्द लगातार बना रहे या सूजन बढ़ जाए तो स्वयं दवा लेने के बजाय हड्डी एवं जोड़ विशेषज्ञ से जांच कराएं।

स्टेंट लगाने के बाद भी दोबारा पड़ सकता है हार्ट अटैक, डॉक्टरों ने बताए जरूरी तथ्य

हार्ट अटैक के बाद मरीज की बंद या संकरी हो चुकी हृदय धमनी को खोलने के लिए स्टेंट लगाया जाता है। इससे रक्त प्रवाह सामान्य करने में मदद मिलती है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि भविष्य में हार्ट अटैक की संभावना पूरी तरह खत्म हो जाती है।

हृदय रोग विशेषज्ञों के अनुसार स्टेंट केवल प्रभावित धमनी को खोलता है। यदि शरीर की दूसरी धमनियों में वसा जमना जारी रहता है, या मरीज दवाएं समय पर नहीं लेता, धूम्रपान करता है, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल पर नियंत्रण नहीं रखता, तो दोबारा हार्ट अटैक का खतरा बना रह सकता है।

डॉक्टर बताते हैं कि स्टेंट लगाने के बाद रक्त को पतला रखने वाली दवाएं, कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित करने की दवाएं और नियमित चिकित्सकीय जांच बेहद जरूरी होती है। बिना सलाह के दवाएं बंद करना स्टेंट में रक्त का थक्का बनने का खतरा बढ़ा सकता है, जो गंभीर स्थिति पैदा कर सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि संतुलित भोजन, नियमित व्यायाम, वजन नियंत्रित रखना, धूम्रपान और तंबाकू से दूरी, तनाव कम करना तथा मधुमेह और रक्तचाप को नियंत्रित रखना दोबारा हार्ट अटैक के जोखिम को काफी हद तक कम कर सकता है। चिकित्सकों का स्पष्ट मत है कि स्टेंट इलाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

राहत और पुनर्वास में नहीं होगी कोई कमी, असम बाढ़ प्रभावित इलाकों में जेपी नड्डा

केंद्रीय मंत्री ने हालात का लिया जायजा,
प्रभावित परिवारों को हरसंभव सहायता का भरोसा

गुवाहाटी। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने असम के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर राहत एवं पुनर्वास कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने प्रभावित लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं और अधिकारियों को राहत कार्यों में किसी भी प्रकार की कमी नहीं रहने देने के निर्देश दिए। जेपी नड्डा ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार मिलकर बाढ़ प्रभावित परिवारों की हरसंभव मदद कर रही हैं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि राहत सामग्री, चिकित्सा सेवाएं, भोजन, पेयजल और पुनर्वास के लिए आवश्यक सभी संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे।



प्राकृतिक आपदा की इस घड़ी में केंद्र सरकार असम के साथ पूरी मजबूती से खड़ी है। उन्होंने अधिकारियों से निर्देशित किया कि राहत और पुनर्वास कार्यों में तेजी लाई जाए तथा किसी भी जरूरतमंद तक सहायता पहुंचाने में देरी न हो।

राहत शिविरों का किया निरीक्षण- दौरे के दौरान उन्होंने राहत शिविरों का निरीक्षण किया, प्रभावित परिवारों से बातचीत की और प्रशासन से राहत वितरण, स्वास्थ्य सेवाओं तथा पुनर्वास कार्यों की प्रगति की जानकारी ली।

केंद्र सरकार ने दिया सहयोग का भरोसा- जेपी नड्डा ने कहा कि

पुनर्वास पर विशेष जोर- उन्होंने कहा कि केवल तत्काल राहत ही नहीं, बल्कि प्रभावित परिवारों के पुनर्वास, क्षतिग्रस्त बुनियादी ढांचे की मरम्मत और आजीविका बहाली पर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा। सरकार का उद्देश्य है कि बाढ़ प्रभावित लोग जल्द से जल्द सामान्य जीवन में लौट सकें।

भगोड़ों पर शिकंजा या अधूरी लड़ाई? आंकड़ों के पीछे छिपे सवाल भी जरूरी

सरकार का दावा है कि पिछले सात वर्षों में 36 देशों से 274 भगोड़े अपराधियों को भारत वापस लाया गया और लगभग 17,874 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की गई। यह निश्चित रूप से कानून प्रवर्तन एजेंसियों की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है। लेकिन लोकतंत्र में केवल आंकड़ों पर ताली बजाना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि उन सवालों का जवाब भी जरूरी है जो इन उपलब्धियों के पीछे खड़े हैं। यदि कार्रवाई इतनी प्रभावी रही है, तो आखिर इतने बड़े आर्थिक अपराधी देश छोड़कर भाग कैसे गए? क्या हमारी जांच एजेंसियां, बैंकिंग व्यवस्था और निगरानी तंत्र समय रहते उन्हें रोकने में विफल रहे? यदि अपराध होने से पहले व्यवस्था मजबूत होती, तो शायद करोड़ों-अरबों रुपये के घोटालों और विदेश भागने की नौबत ही नहीं आती।

संपत्ति जब्त होना एक चरण है, लेकिन असली सवाल यह है कि पीड़ितों का पैसा कितनी तेजी से वापस मिला? कितने मामलों में मुकदमे अंतिम निर्णय तक पहुंचे और कितनों को सजा मिली? जब तक न्यायिक प्रक्रिया समयबद्ध नहीं होगी, तब तक केवल जब्ती और प्रत्यर्पण की खबरें जनता को अधूरी राहत ही देंगी। यह भी आवश्यक है कि कानून का शिकंजा केवल चर्चित नामों तक सीमित न रहे। आर्थिक अपराध, बैंक धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार और



सार्वजनिक धन की लूट करने वाले हर व्यक्ति के खिलाफ समान कार्रवाई हो, चाहे उसका राजनीतिक, आर्थिक या सामाजिक प्रभाव कितना भी बड़ा क्यों न हो। सरकार की उपलब्धियों का मूल्यांकन होना चाहिए, लेकिन उससे भी अधिक जरूरी है ऐसी व्यवस्था बनाना, जिसमें कोई आर्थिक

अपराधी देश छोड़कर भाग ही न सके। मजबूत निगरानी, त्वरित जांच, समयबद्ध न्याय और पारदर्शी कार्रवाई ही इस लड़ाई की वास्तविक सफलता का पैमाना होंगे। जनता अब केवल आंकड़े नहीं, बल्कि जवाबदेही और स्थायी सुधार भी देखना चाहती है।

दीपके और सौरभ पर पाँक्सो के तहत कार्रवाई की मांग

जीरो एफआईआर के लिए पुलिस को शिकायत

नई दिल्ली/सिलीगुड़ी। जंतर-मंतर पर हुए नीट पेपर लीक विरोध प्रदर्शन को लेकर नया विवाद खड़ा हो गया है। पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी की अधिवक्ता रिकी चटर्जी सिंह ने कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के आयोजकों अभिजीत दीपके, सौरभ दास और अन्य के खिलाफ जीरो एफआईआर दर्ज करने की मांग करते हुए पुलिस को शिकायत सौंपी है।

शिकायत में आरोप लगाया गया है कि प्रदर्शन के दौरान नाबालिग बच्चों को शामिल किया गया। इसी आधार पर पाँक्सो अधिनियम तथा भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज करने की मांग की गई है।

तथा हैं शिकायत के मुख्य आरोप?

अधिवक्ता का आरोप है कि प्रदर्शन के दौरान 12 वर्ष की बच्चियों की मौजूदगी रही। उनका कहना है कि



यदि नाबालिगों को विरोध प्रदर्शन में शामिल किया गया, तो इसकी जिम्मेदारी

आयोजकों की तय होनी चाहिए। शिकायत में पाँक्सो अधिनियम की

धाराओं का उल्लेख करते हुए मामले की जांच की मांग की गई है।

फंडिंग पर भी उठाए सवाल

शिकायत में प्रदर्शन के लिए धन के स्रोत पर भी सवाल उठाए गए हैं। अधिवक्ता ने मांग की है कि जांच एजेंसियां यह पता लगाएं कि आयोजन के लिए धन कहां से आया और उसका उपयोग किस प्रकार किया गया।

इस बीच सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर फैजान अंसारी ने भी दिल्ली पुलिस को लिखित शिकायत देकर अभिजीत दीपके के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। उनका आरोप है कि दीपके के सहयोगियों ने उन पर पहले हमला किया था और इस संबंध में पहले से मामले दर्ज हैं। उन्होंने पुलिस से मामले की जांच कर उचित कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है।

जांच के बाद ही होगी स्थिति स्पष्ट

फिलहाल ये सभी आरोप शिकायतकर्ताओं द्वारा लगाए गए हैं।